Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

नरेश मेहता कृत प्रवाद पर्व में आधुनिक युगबोध

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

नरेश मेहता कृत प्रवाद पर्व में आधुनिक युगबोध

Dr. Mahavir Singh Khatkar

Hindi Lecturer, Haryana College of Education, Kinana (Jind)

----------X----------

प्राचीन ग्रन्थ तथा अधिकतर महाकाव्य लोक मंगल हित के लिए लिखे गये हैं जिसमें प्रमुख वाल्मीकी रामायण तथा भागवत गीता तुलसी कृत 'रामचरितमानस' हैं ये पवित्र ग्रन्थ प्राचीन आर्य सभ्यता एंव संस्कृति का दर्पण है। इसमें प्रदत उपदेश वर्तमान कालीन समाज के कल्याण में सहायक हैं। रामायण में आदर्श राम राज्य की स्थापना की गई है अर्थात् न्याय, प्रजातन्त्र राज्य में योग्यतानुसार विकास के लिए समान अवसर दिये जाते है। इसके साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता रक्षित होती है प्रवाद पर्व में भी आम व्यक्ति के विचारों की स्वतन्त्रता पर बल दिया गया है जिसमें राजा राम लोकतन्त्र रक्षक के प्रतिक है तथा भरत, लक्ष्मण राजतन्त्र के प्रस्तुत सोधपत्र का मुख्य उदेश्य प्रवाद पर्व में लिखें गए संवादो, उपदेशों के माध्यम से साधारण व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा तथा समान न्याय राजा का प्रमुख धर्म होता है। राज्य किसी कुल या व्यक्ति की वपौती नही होती।

मनुष्य की स्थिति भी कितनी अजीब ओर दयनीय है वह नियति के हाथों कठपुतली है वह स्वंय जो चाहता है वह नही कर पाता उसकी सारी योजनाएँ अपूर्ण रह जाती हैं, उसके सारे सपने आकार ग्रहण करने से पूर्व ही टूट जाते हैं। इस भूतल पर जन्म लेकर उसे कर्म करना पड़ता है बिना कर्म किये वह एक क्षण भी नही रह पाता दर्शनशास्त्र के अनुसार मनुष्य को निर्लिप्त रहकर कार्य करने चाहिए। उसे राग द्वेष से रहित होकर अपना दायित्व निभाना चाहिए उसे फल की इच्छा किये बिना ऐसे कार्य करने पड़ते है जिन्हे करते समय उसका हृदय चीत्कार करे उसका मन बार–बार उसे ऐसा करने से रोकते हैं पर परिस्थितियाँ, कर्तव्य भावना उसे उस कार्य के लिए बाध्य करती हैं यही स्थिति राम के आगे हैं। वे जानते हैं सीता निष्पाप है रावण के यहाँ रहने पर भी उसका स्तीत्व अंखड है पर साधारण जन धोनी ने शंका उठायी हैं, प्रवाद फैलाया है कि सीता निष्पाप व पवित्र रह ही नही सकती, उनका शरीर रावण की वासना से कलुषित हो गया है यहाँ राजा राम की बुद्धि तथा हृदय सीता को दंड देना नही चाहते पर राजा का कर्तव्य बाहय करता है कि वह धोबी की बात को सुने ओर प्रजा में संभावित असंतोष ओर शंकाओं के फैलाने से पूर्व ही उस समस्या का निराकरण करें इस विषय पर यदि राजा अपने विवेक से निर्णय लेते हैं तो उसके हृदय को आघात पहुँचता है अब उनके सामने दो रास्ते है एक रागात्मक संबध से उपर उठकर प्रजा के प्रति दायित्व पूर्ण करें या विद्रोह को कुचल दिया जाये। या उस प्रवाद को अनसुना कर दें।[1]

जब व्यक्तिगत संबधों तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भाव में टकराहट होती है तो ऐसी स्थिति में संकट उत्पन्न हो जाता है राम के जीवन में तो ऐसे क्षण बार–बार आते रहे मुनि विश्वामित्र की आज्ञा और माता–पिता के प्रति स्नेह से लेकर सीता के परित्याग तक अनेक बार वे विषम परिस्थितियों से गुजरे इसके अलावा भगवान बुद्ध तथा अर्जुन के सामने भी यही प्रश्न उपस्थित हुआ था सिद्धार्थ गौतम के सम्मुख एक ओर पत्नी–पुत्र का मोह था दूसरी ओर महाभिनिक्रमण का न्यौता। अब राम के सामने भी यही प्रश्न आ खड़ा हुआ कि पति के नाते निष्ठावान पत्नी के प्रति कर्तव्य भावना या प्रजा में फैले प्रवाद का निराकरण करें।[2]

प्रजा के प्रत्येक व्यक्ति को, साधारण से साधारण व्यक्ति को भी ये अधिकार है कि वह शासक की नीति, शासन पद्धति, शासन तंत्र के दोषो की आलोचना करे हो सकता है कि आरम्भ में भय के कारण ये आक्षेप खुलकर स्पष्ट शब्दों में व्यक्त न किये जाये पर आगे चलकर विरोध क्रान्ति तथा विद्रोह का रूप ले सकता है। जिससे रक्त क्रान्ति, हिंसा, रक्तपात जैसे परिणाम हो सकते हैं शासक अपदस्य हो सकता है व्यवस्था बदली जा सकती है जैसे रूसी सम्राट जार तथा फ्रांसीसी क्रान्ति ने नपोलियन को अपदस्थ कर दिया।[3]

प्रायः शासक वर्ग जो अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है और स्वंय को अधिनायक कहता है तथा प्रजा उसकी दास है ईश्वर ने उसे प्रजा पर शासन करने के लिए पैदा किया है अतः वह कोई गलती नही कर सकता अतः प्रजा को उसके आदेशों का पालन करना चाहिए अधिकार केवल शासक तन्त्र का है पर ऐसा क्यों जो अधिकार गरिमा, गौरव, प्रभुत्व राजा अपने लिए माँगता है उसे प्रजा क्यों नहीं माँग सकती? प्रजा भी मनुष्य है जो राष्ट्र के विकास, त्याग, बलिदान में बराबर सहयोग देते हैं।[4]

अनुशासन तथा नियमों का पालन कराना शासक का कर्तव्य है ओर उसके लिए उसे कठोर बनना भी पड़े तो भी बनना चाहिए परन्तु साथ ही उसे ध्यान रखना चाहिए कि वह प्रजा पालक है, जनता का प्रतिनिधि है राज्य सिंहासन पर इसलिए नही बैठा कि केवल अपने हित–साधन में लगा रहे तथा अपने तथा अपने परिवारजनों के लाभ की बात सोचे प्रजा को भी वही अधिकार चाहिए तो उसे प्राप्त हैं जनता को भी वही आजादी मिलनी चाहिए अतः उसे जनता की वाणी को कुचलना नही चाहिए। प्रजा का अपना अस्तित्व है अतः जनता की भावनाओं विचारों ओर आकांक्षाओं का भी उसे ध्यान रखना चाहिए।[5]

यदि शासक या किसी राजवंश को इतिहास प्रसिद्ध होना है, यदि वह चाहता है उसका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाये तो उसे सदकार्य अपनी प्रजा और सम्पूर्ण मानव जाति के हित और कल्याण के लिए कार्य करने होगें उनके विचारों, नीतियों, कार्यकलाप को पढ़कर लोगों को विश्वास हो कि वे उदात्त चरित्रवान थे। उनमें उदारता प्रजाहित की अदम्य आकांक्षा, प्रजा के लिए सर्वस्व–बलिदान की भावना भी इतिहास पुरूष बनने के लिए तलवार बल की नहीं, जबकि उसके दण्ड नीतिपरक तथा आतंक, अत्याचार ओर दमन का मार्ग त्याग कर प्रजा–हित ओर सुशासक के कार्य करने होगें।[6]

www.ignited.in

यहाँ भरत राजा को समदर्शी न्याय की बात कहते हैं। राजा उनकी बात का समर्थन करते है और कहते है न्यायधीश व कानून सबके लिए एक जैसे हों किसी के साथ अन्याय न हो अपराधी को दण्ड दिया जाये व निरपराध बचना चाहिए परन्तु समदर्शी होने के साथ एक ओर भी बात आवश्यक है कि कानून बनाने वालों, कानून का पालन कराने वालों व अपराधी को दण्ड देने वालों को गंभीर चिंतक, तत्ववेता व प्रत्येक बात को गहराई से समझने की शक्ति रखने वाला होना चाहिए ऐसा होने पर ही सच्चा न्याय हो सकेगा चोर को चोरी करते हुए पकड़ने पर दण्ड देना एक पहलु है पर उसने चोरी क्यों की किन परिस्थितियों में की जानना बहुत जरूरी है इन बातों को ध्यान में रखकर दण्ड विधान करें।[7]

व्यक्ति तभी स्वतन्त्र–चेता हो सकता है जब उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध ना हो वह भय, आंशका से रहित हो उसे ये विश्वास हो कि उसके चिन्तन मनन से जिन रहस्यों का पता लगायेगा और वह जिन सिद्धान्तो की प्रतिष्ठा करेगा उसे ऐसा करने की पुरी आजादी होगी यही कारण है वैदिक युग में अनेक ऋषि मूनि हुए जिन्होने तत्व–दर्शन के विकास में योगदान दिया उनके इस कार्य के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ थी वे स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करते थे उनकी साधना में कोई विध्न नही पहुँचता था उस समय पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता थी अतः जब मनुष्य को सोचने तथा अपना अभिमत करने की स्वतन्त्रता होती है तो उसे दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है जो सभ्यता एंव संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है।[8]

निष्कर्षः–

प्रवाद पर्व में कवि ने जिन सवांदो को लिखकर प्राचीन वैदिक संस्कृति से अवगत कराया है उसने हमारी आधुनिक सोच को बदलने की कोशिश की है तथा वैदिक संस्कृति के महानता के कारण बताये हैं प्रवाद पर्व से यह स्पष्ट होता है कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है चाहे वह राजा है या साधारण व्यक्ति लोकतन्त्र में साधारण व्यक्ति की स्वतन्त्रता को कुचलना रावण राज्य के बराबर है जो राज्य के लिए श्रेयकर नही होती तथा राजा को चाटुकारिता करने वालो से ऊपर उठकर कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए शासक का उत्तरदायित्व प्रजाहितकारी होना चाहिए न कि अपने तथा अपने सम्बन्धियों तक आधुनिक परिपेक्ष्य में भी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर अंकुश क्यों? जिस तरह शासन तन्त्र ने स्वामी रामदेव के नेतृत्व में जन–आंदोलन को इस तरह से कुचला कि महिलाओं को भी लाठियाँ भांजी, आधी रात के वक्त बाबा को महिलाओं के भेष में भागना पड़ा उसी तरह मुम्बई के शेर कहे जाने वाले बाल ठाकरे की मृत्यु पर दो महिलाओं द्वारा मुम्बई बंद, आखिर एक व्यक्ति के लिए, नेट पर आक्षेप उठाया तो समझो राजद्रोह कर दिया अनेक पीड़ा, भय, सहनी पड़ी हाथ जोड़े पैर पकड़कर माँफी मांगकर ही अपनी तथा अपने घर वालों की जान बचाई यह अभिव्यक्ति को कुचलना नही तो क्या है? क्या ये लोकतन्त्र की कैद नही? अतः हमारे शासकों को हमारे इतिहास से सीख लेनी चाहिए तथा सच्चा राज धर्म अपनाना चाहिए।

सन्दर्भः–

1. इतिहास और प्रतिइतिहास–राम क्या यही है मनुष्य का प्रारम्भ?

2. इतिहास और प्रतिइतिहास–क्या इसलिए मनुष्य देश ओर काल?

3. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 28 – तर्जनी वह किसी की भी हो।

4. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 29 – कैसे है? राजशक्ति पर प्रश्नचिन्ह् लगाना।

5. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 31 – सब कुछ किया जा सकता है।

6. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 33 – इतिहास खड्ग से नही।

7. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 41–42 – भरत न्याय होता है प्रभु

8. इतिहास और प्रतिइतिहास– पृष्ठ 42–43– मनुष्य के बोलने का अर्थ जानते हो?